

॥ श्रीः ॥

देवादिदेवमहादेवजी प्रणीत

# योगिनीतन्त्र ।



मुरादाबादनिवासी पण्डित कन्हैयालालमिश्र  
कृतभाषानुवादसहित।

इसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने  
अपने “लक्ष्मीवैकटेश्वर” छापेखानेमें  
छापकर प्रसिद्ध किया ।

सम्बत् २०१३, शके १८७८.

कल्याण-मुंबई.

सब हक यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खा है.

श्रीः ।

## योगिनीतंत्रकी अनुक्रमणिका ।



पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
१	उपोद्घात-योगिनीतंत्र विषयक देवीका प्रश्न भगवान्का उत्तर गुरुम- हिमा गुरुविषयक देवीका प्रश्न गुरुका वर्णन है ।	१	१ वान्का अमोघ उत्तर वर्णित है...	२७
२	महाविद्या और चासुंडा काली रहस्य विषयक देवीका प्रश्न भगवान्का तद्विषयक यथोचित उत्तर, जपके गोप्य विषयसंबंधी देवीका प्रश्न भगवान् द्वारा मालाओंका वर्णन फिर विशेषजिज्ञासाका प्रश्न और भगवान्का उत्तर तथा भास आदिका वर्णन है ।	४	४ षट्कर्म साधनका वर्णन है ५ शय्या साधनआदि विविध साधनोंका वर्णन ...	३९ ५३
३	युद्ध अथवा ज्वरादि रोगनिवृत्तिविषयक दे- वीका प्रश्न ईश्वर द्वारा वारण कवचका वर्णन, जगद्विषयक प्रयोगका प्रश्न और उत्तर, त्रेकोन्य- मोहन कवचका वर्णन अनेक प्रकारके लाभार्थ देवीका प्रश्न और भग-	६	६ दिव्य भाव और वीर भाव नामक दो योगोंका वर्णन है...	६७
		७	७ स्वप्रावर्ती मृतसंजीवनी मधुमती और पद्मावती विद्याका वर्णन तथा वशीकरण विषयक प्रश्नो- त्तर वर्णित हैं ...	८०
		८	८ योगिनियोंकी उत्पत्ति विषयक प्रश्नोत्तर घोर दैत्य विषयक भगवती और भगवान्का कथो- पकथन है ...	९३
		९	९ भगवान्के आश्चर्यका वर्णन भगवतीके चर- णाधोभागमें भगवान्के निपलित होनेका वर्णन है ...	१०५
		१०	१० भगवान्के द्वारा देवीकी स्तुतिका वर्णन और कारणार्णवका वर्णन है	११८

पटल.	विषय.	पृष्ठ.
११	स्थानभेदसे मंत्रादिके साधनका फलवर्णन किया गया है ...	१२९
१२	मन्त्रसिद्धिप्रतिबन्धक प्रश्नके उत्तरमें नरकासुरकी कथा, वसिष्ठजी और कामाख्याका आख्यान है ...	१४१
१३	योगिनी स्त्रीका वर्णन और ब्रह्मकर्मसाधनका वर्णन है	१५५
१४	भ्लेच्छगणकी उत्पत्तिका वर्णन और कामपालकोके आख्यानका वर्णन है	१६६
१५	कामाख्याका वर्णन है	१८२
१६	कालीका वर्णन है ...	१९४
१७	कोलानिपातका वर्णन और कुमारी शिलाका वर्णन किया है ...	२०५
१८	कहोल चरित्रका वर्णन और गंगामाहात्म्य तथा मंत्रका वर्णन है ...	२१५
१९	कालभैरवकी सिद्धिका वर्णन महाकालभैरवका स्तोत्र और भगवतीका आशास्यवाद वर्णित हैं.	२२५
योगिनीतंत्रके पूर्वखण्डकी अनुक्रमणिका समाप्त ।		

पटल. विषय. पृष्ठ.  
योगिनीतंत्रके उत्तर खंडकी अनुक्रमणिका ।

१	कामरूपके विषयमें कालीका प्रश्न । इसका उत्तर देते समय भगवान् द्वारा पीठोंके नाम और उनकी दिशाओंका निर्णय करना पीठोंके आकार और उनके चिह्नादिका वर्णन किया गया है	२३९
२	यात्राविधान-द्वादश लग्नोंमें दिशाओंमें गमनका विधिनिर्देशक योगिनीविचार योगविवेचन नक्षत्रविचार यात्राकालमें शुभाशुभ शकुननिर्णय मुहूर्तज्ञान श्राद्धकर्तव्य और उसके आधारेसे अन्य कर्तव्य कर्मोंका विधान किया है	२४९
३	कामरूपके वर्णनमें कूटस्थोंकी पूजाविधि और अनेक तीर्थोंका वर्णन किया गया है	२६१

( १६ ) योगिनीतंत्रकी अनुक्रमणिका ।

पटल	विषय	पृष्ठ.	पटल	विषय.	पृष्ठ.
४	देवीका भगवान् विष- यक प्रश्न भगवान्का प्रत्येक तिर्यस्थानमें अपने पृथक् पृथक् नामोंका वर्णन करना कण मोचन माहात्म्य सहस्र जन्माजित पाप- नाश विषयक देवीका प्रश्न—इसका उत्तर देवे समय भगवान्के द्वारा अश्वक्रान्त तीर्थके माहा- त्म्यका वर्णन है २७५			कर्त्तव्यवर्णन करते करते अनेक कुण्डोंका वर्णन किया है ... ३६३	
			७	मंत्रोद्धारका वर्णन ज्ञेय पद्धतिमहाज्ञानकी विधि और माहात्म्यका वर्णन है ... ३९६	
			८	सरस्वती और उसके पा- श्वर्षसी तीर्थोंका वर्णनघोर- पापनिवृत्तिके लिये भ- गवतीका प्रश्न फिर महा- देवका उत्तर पापफल- भोगके अन्तर मोक्ष ला- भका वर्णन है ... ४४१	
५	अनेक शैल—सरोवर— नदी और नदोंका वर्ण गयाकूपके माहात्म्यका वर्णन और सर्पणमादिका फल—फिर सातगयाका वर्णन आशुविधि और माहात्म्य वर्णित है ... २९९		९	हरिक्षेत्रका वर्णन दोष- शोषचार पूजन विधि । मणिकूटमें विष्णुकी स्थि- तिसंबंधी देवीका प्रश्न उसका उत्तर ग्रंथ माहात्म्य सह वर्णित है ... ४६५	
६	आद्वके द्वितीयदिनका				

योगिनीतंत्रके उत्तर खंडकी अनुक्रमणिका समाप्ता ।